ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

मानव जीवन के आचार व्यवहार विदुर नीति के संदर्भ में

झरणाबेन प्रवीणचंद्र त्रिवेदी

पी. एचडी, विद्यार्थिनी, गुजरात युनिवर्सिटी

डॉ. कालिन्दी पाठक

एस. वी. आर्ट्स कोलेज, गुजरात युनिवर्सिटी

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

प्रस्तावना

महाभारत हिंदू सभ्यता और संस्कृति का एक महान ग्रंथ है। इसका आधार अधर्म के साथ धर्म की लड़ाई पर टिका है। इसे पांचवा वेद भी कहा जाता है। महाभारत में ही समाहित 'श्रीमद्भगवद्गीता' एवं 'विदुर नीति' इसके दो आधार स्तंभ है। एक में भगवान श्रीकृष्ण अधर्म के विरुद्ध अर्जुन को युद्ध के लिए प्रेरित करते हैं तो दूसरे में महात्मा विदुर युद्ध टालने के लिए धृतराष्ट्र को अधर्म का साथ छोड़ने के लिए उपदेश करते है। द्वापर युग की विदुर नीति आज भी उतनी ही प्रासंगिक है और समाज में फैली दुर्योधन वृत्ति दूर को करने के लिए विदुर का मार्गदर्शन समाज को सही मार्ग दीखा सकता है।

आचार नीति

आचार नीति में मनुष्य के समाज के लिए विशुद्ध आचरण का उल्लेख है। आचार नीति की बातों को अपनाकर ही मानव उचित जीवन जी सकता है। आचार नीति मनुष्य को उसके आचार व्यवहार, गुण – अवगुण और कर्मों के सिद्धांत से परिचय करवाती है। अन्य शब्दों में आचार नीति मनुष्य के नैतिक जीवन का विवरण है। मनुष्य इस जीवनशैली को अपनाकर सदा उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

भारतीय नीति शास्त्र को मानवीय आचार का एक आदर्श मुल्क विज्ञान माना गया है। जो भला–बुरा, ठीक–गलत तथा जीवन के उद्देश्य के विचारों का अध्ययन करता है। भारतीय नीति शास्त्र का क्षेत्र मानवीय आचार तक ही सीमित माना गया है। मनुष्य ही आचरण करने योग्य प्राणी कहा गया है। मनुष्य का आचरण उसके जीवन का अभिन्न अंग है।

मानव जीवन में आचार व्यवहार

उचित आचार व्यवहार का अर्थ माना जाता है सदाचार को अपनाना। सदाचार को अपनाने वाला कल्याणकारी परिस्थितियों से जुड़ा रहता है। सदाचार या अच्छा आचरण व्यक्तिगत जीवन में साधना का विषय नहीं है। अपितु इसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। व्यक्ति के छोटे से परिवार पड़ोस, ग्राम, नगर, प्रांत, राज्य तथा अखिल विश्व के जीवन में सदाचार का महत्वपूर्ण प्रभाव और आदर है। मनुष्य को नैतिक कार्य ही अपनाना चाहिए। इसी से तो उसका व्यवहार दूसरों के प्रति अच्छा रहेगा।

मनुष्य के सभी कार्य नैतिक नहीं होते उसके वे ही कार्य आचार व्यवहार की श्रृंखला में शामिल किए जा सकते हैं जो एच्छिक है अथवा जिन्हें वह अभ्यास के कारण करता है। मनुष्य को अच्छा आचरण करते रहने के लिए निश्चित तौर से अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए। दोष रहित पवित्र व्यक्ति से आचरण को सदाचार कहते हैं। सदाचार को सुसंस्कृत व्यवहारों की समाविष्ट भी कहा जाता है। वेदो के अनुरूप अर्थात वेद आदि विहित व्यवहार ही सदाचार कहा गया है – ''सदाचार ही सभी धर्मों का मूल है।'' इसीलिए यदि वेद आदि विषयों के महाज्ञाता भी सदाचारहीन है तो वे भी सामाजिक दृष्टि से पतित हि समझे जाएंगे, सम्मान के अधिकारी नहीं होंगे।

महात्मा विदुर ने भी कहा है कि व्यक्ति के विकास के लिए उसे अनाचार का मार्ग त्याग देना चाहिए। व्यक्ति को सोच समझकर ही आचरण करना अर्थात हित–अहित को सोचकर ही आचरण करना चाहिए।

स्वमर्थं यः परित्यज्य परार्थमनुतिष्ठति।
मिथ्या चरति मित्रार्थे यश्च मूठः से उतरते।।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA An International Multidisciplinary Research e-Journal

अर्थात् जो व्यक्ति अपने कर्तव्य को छोड़कर दूसरों के कार्य पूर्ण करने में संलग्न रहता है और जो मित्रों, शुभ चिंतको से कपट आचरण करता है, वह मूर्ख है। अपने कर्तव्य भूलकर दूसरों के कार्यों के संलग्न होने के दो ही प्रमुख कारण होते हैं, लालच अथवा भावुकता। अपने कार्य को पूर्ण करते हुए दूसरों के कार्यों को कर देना सहयोग कहा जाता है। कपट करने वाला नष्ट ही होता है, यह शाश्वत सत्य है।

मानव जीवन के श्रेष्ठ गुण

मनुष्य को इन गुणों को हमेशा अपनाने चाहिए।

षडेव तु गुणाः पुसां न हातव्याः कदाचन ।
सत्यं दानमनालस्य मनसूया क्षमा धृतिः ।।

अर्थात् सत्य, दान, कर्मठता, दूसरों पर दोष न लगाना, क्षमा और धैर्य इन छ गुणों को कभी नहीं त्यागना चाहिए। यहां विदुर कहना चाहते हैं कि हे महाराज! अगर पांडवों से कोई गलती हुई है तो आप धैर्य रखते हुए उन्हें क्षमा कर दें। अपने पुत्र की त्रुटियों को छिपाने के लिए उन पर दोष न लगाए। आपको अपने यश को बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। उसके लिए इन गुणों को अपनाना चाहिए–

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपर्यान्त प्रज्ञा च कैरयं च दमः श्रृतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्तिः कृतज्ञता ।।

अर्थात् बुद्धिमता, कुलीनता, दम, शास्त्रों में रुचि लेना, पराक्रम, कम बोलना, शक्ति के अनुरूप दान करना और किसी के द्वारा किए गए उपकार को मानना यह आठ गुण ऐसे हैं जिनसे व्यक्ति स्वतः यश का भागी होता है, क्योंकि कहते हैं इसी से मनुष्य को स्वर्ग में स्थान मिलता है।

व्यक्ति की उन्नति और पतन स्वभाव पर निर्भर है

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहने के लिए उसका निरंतर विकास आवश्यक है व्यक्ति के विकास की यह धारणा मुख्य रूप से मनुष्य के स्वभाव पर निर्भर करती है। व्यक्ति और समाज के हित के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अपने उचित यानि सहज स्वभाव से सबको आकर्षित करें। एक व्यक्ति के स्वभाव का अन्य पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि अन्य सभी उससे अच्छा या बुरा उसी तरह का व्यवहार करने लगते हैं जैसा वह अन्य के साथ अपना स्वभाव रखता है। समाज में रहते हुए व्यक्ति की उन्नति उसके स्वभाव से ही होती है और उसके पतन का आधार भी उसका स्वभाव ही होता है। संपूर्ण सामाजिक संगठन का अंतिम लक्ष्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है अर्थात् व्यक्ति को उन्नति के मार्ग की ओर ले जाना है और यह उन्नति का मार्ग मनुष्य अपने अच्छे यानि उन्नत स्वभाव से ही प्राप्त कर सकता है, इससे विपरीत स्थिति में होने पर मनुष्य पतन की ओर गिरता चला जाता है।

व्यक्तिगत जीवन में व्यक्ति के स्वभाव का स्थान सर्वोपरि है। व्यक्ति का स्वभाव उसके जीवन का आधार है। स्वभाव ही व्यक्ति को उन्नत करता है, स्वभाव ही व्यक्ति को नष्ट कर देता है। मनुष्य को अपने स्वभाव में संतुलन बनाए रखना चाहिए यानि समय तथा स्थान देखकर कहने योग्य बात को ही कहना चाहिए, बिना सोचे समझे कुछ भी कहने वाला नुकसान ही पाता है। जो व्यक्ति अपने स्वभाव पर संयम रखता हुआ कुछ कहता है, जो अपने सहयोगियों के पूछने पर ही उचित परामर्श देता है, सब विवादों को सह लेता है अर्थात जो स्वभाव से सहिष्णु तथा क्षमा प्रिय है, वही व्यक्ति संसार में सर्वत्र प्रशंसा का पात्र होता है।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

उपसंहार

हम कह सकते हैं कि महात्मा विदुर ने अपनी आचार नीति में लोक व्यवहार की सभी बातें बहुत ही विस्तृत और अच्छे ढंग से धृतराष्ट्र को समझाई है। साथ-साथ यह भी बताने का प्रयास किया है कि व्यक्ति सद्मार्ग को अपनाकर संसार में हमेशा उन्नति प्राप्त कर सकता है।

आचार नीति व्यक्ति को समझाती है कि व्यक्ति सदा व्यवहार से अपने कल्याण का मार्ग स्वयं खोलता है। कौन-कौन से अच्छे गुण व्यक्ति को उन्नति देते हैं और किन बुरे कर्मों से दूर रहकर व्यक्ति उन्नति पा सकता है। आचार नीति यह भी बताती है कि व्यक्ति अपनी इंद्रियों पर संयम रखें तो वह अपने जीवन के हर लक्ष्य को सिद्ध कर सकता है। अपने मधुर स्वभाव से व्यक्ति संसार की हर प्रकार की विपत्तियों का सामना कर सकता है। हम कह सकते हैं कि आचार नीति व्यक्ति के संपूर्ण जीवन की उन्नति का मार्ग बताती हैं।

*****

संदर्भ :

1) विदुरनीति – सत्यकेतु
2) विदुरनीति (हिन्दी अनुवाद) – आचार्य विश्वामित्र शर्मा
3) विदुरनीति – विवेक श्री कौशिक विश्वामित्र
4) भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास – डॉ. भी. ला. आत्रेय
5) भारतीय नीतिशास्त्र – डॉ. दिवाकर पाठकर
6) भारतीय नीतिशास्त्र का विकास – डॉ. राजवली पाण्डेय